आध्यात्म

क्या वास्तव में राधा नाम की कोई महिला थीं

सुशीला जोशी
स्वतंत्र लेखिका

राधा अपने युग की महानायिका थी जिसने सम्पूर्ण जगत को कुवृत्तियों से परे रख बिना कुछ चाहे प्रेम की नयी परिभाषा गढ़ी और बिना विवाह किए आज भी मन्दिरो में भगवान कहे जाने वाले कृष्ण के साथ स्थापित हो कर हमारी आस्था का आधार बनी हुई है।

हमारा धर्म अर्थात सनातन धर्म कोई रीति या परम्परा नही , कोई विशेष पन्थ नही ,कोई संस्कृति नही वरन आस्था और विश्वास पर अडिग खड़ा वह ढाँचा है जो समष्टि में व्यष्टि और व्यष्टि में समष्टि का निर्धारण कर संस्कारों की परिभाषा स्वयं गढ़ता है। इसी आस्था और विश्वास ने पुरुष और प्रकृति के बीच अटूट सम्बन्ध स्थापित किया। इसीलिए कभी राम ,कभी श्याम ,कभी महादेव तो कभी विष्णु बन कर पुरुष अपनी शक्ति को काली ,महाकाली , लक्ष्मी सीता या राधा या फिर सरस्वती के नये रूपो में स्वयं में ही समाये रहा।

विवाह संसार सभी धर्मों के विकास मार्ग है किन्तु सनातन धर्म मे आज भी आधिदैविक प्रेम की पूजा होती है। पूर्ण कलाओं से युक्त अवतारी पुरुष कृष्ण ने एक राजा की भांति बंधक व समाज मे सताई हुई स्त्रियों का उद्धार कर अपने भवन में पत्नियों कर रूप में आश्रय दे कर दिया। कदाचित उन्हें समाज में कलंकित होने से बचाने के लिए या समाज के मुँह पर ताला लगाने लिए कृष्ण को यही उचित मार्ग सूझा होगा । अपनी विवाहित पत्नी रुक्मिणी को गृह स्वामिनी बनाया और स्वयं उसके पुत्र प्रद्युम्न के पिता कहलाये किन्तु मन्दिरों की विश्वास पात्री राधा को बिना किसी बन्धन के ,बिना किसी इच्छा या स्वार्थ के अपने साथ ही हृदय की प्रेमिका के रूप में अपने साथ ही रखा और "आत्मवत्सर्व भूतेषु ", "वसुधैबकुटुम्भकम", "एकोहमबहुस्यां" जैसी सूक्तियों की धारणा को ज्यो का त्यों रखा। यही सनातन धर्म का मर्म है ,अध्यात्म है ,विश्वास है ,नियमन है और अनुपालन भी।

कहते है संसार नश्वर है जो न जन्म से पूर्व दिखता है और न मृत्यु के बाद ही इसका कोई अस्तित्व दिखता है। अर्थात जो इस संसार में जन्मा है उसका विनाश निश्चित है। इस संसार में अनेक धर्मो के सिद्ध पुरुष ,पैगम्बर , अवतार और पन्थियों ने जन्म लिया और ईश्वर प्रदत्त कार्यो को पूरा करके संसार से विदा भी हुए। राम ,कृष्ण ,जीसस , नानक , बुद्ध ,महावीर ,मुहम्मद साहब ने जन्म

लिया और अपने अपने कर्तव्य निभा चले भी गए। फिर राधा जो कृष्णावतार की आत्मा , शक्ति , अर्चना ,प्रेम ,भावना ,भूत ,भविष्य और वतर्मान सब कुछ थी ,का सनातन धर्म ग्रंथों में कोई अंत पढ़ने या देखने में क्यों नही आता जबकि उसका नारी के रूप में, वृषभान की पुत्री के रूप में जन्म शास्त्र सम्मत हैं 1 उसे जितना घनिष्ट कृष्ण के साथ दिखाया गया, उसके परिणाम स्वरूप तो कृष्ण से निर्मम विछोह के बाद उसका सोचनीय ,मार्मिक , रहस्यात्मक या फिर दयनीय अंत की चर्चा होनी चाहिए थी ,जो कहीं पढ़ने को नही मिलती।

श्रीमद्भागवत , ब्रह्म वैवर्त पुराण में कृष्ण की भांति राधा के बचपन की लीलाएं भी पढ़ने में नही आती। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार राधा को किशोरावस्था में ही प्रकट होते हुए दिखाया है। राधा कृष्ण की बाल सखी होते हुए भी कृष्ण के साथ उसकी किस भी बाल लीला की चर्चा पढ़ने को नही मिलती और न ही किशोरावस्था में प्रेम के पश्चात के जीवन की किसी चर्चा का वर्णन मिलता है। उसके जीवन के अंत की भी कोई चर्चा नही 1 तो फिर राधा क्या किशोरी मात्र ही रही? कृष्ण के कर्तव्य पथ पर व्यस्त होने के पश्चात राधा का क्या हुआ ?न उसका विवाह ,न उसके कृष्ण की याद में स्मृतिभंग ,न उसकी मृत्यु की ही चर्चा। तो फिर राधा गयी कहाँ? कृष्ण के इतने निष्ठुर होने का कारण भी नही दर्शाया। तो क्या राधा कोई अजन्मी शक्ति थी ?इच्छाधारी कोई पराजगत की आत्मा थी ? या फिर कृष्ण के प्रेम की हूक थी जिसे जब मन किया अपनी अवतारी शक्तियों से स्त्री का आकार दिया और आत्म-संतुष्ट होने पर स्वयं में समाहित कर लिया ? ऐसी घटना माया- कला जगत में अक्सर देखी व सुनी गई है। किन्तु साक्षात आँखों का प्रमाण ,मन का तोष और बुद्धि का वैपर्य उसे स्वीकार नही करता।

कृष्ण राधा का प्रेम में विह्वल रहना , साथ साथ रहने की इच्छा रखना ,प्रेम में सामाजिक मर्यादओं को तोड़ना ,कृष्ण की बाँसुरी सुन कर काम छोड़ कर भागना , समय असमय कृष्ण से मिलने घर के बाहर निकल जाना -सभी कुछ तो मानवीय गतिविधियां हैं जो हीर रांझा , लैला मजनू ,रोमोयो जूलियट ,रेशमा और शेरा की कथाओं को साकार करती हैं। जब इन सबका अंत सबके सामने है तो द्वापर युग की महानायिका का अंत कहीं क्यों नही मिलता ? जो आज भी एक अनसुलझा यक्ष प्रश्न है।

कहते है कि कृष्ण अपनी किशोरावस्था तक ही बरसाना और वृन्दावन में रहे उसके बाद कृष्ण ने मथुरा गमन किया जहां उन्होंने अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया और फिर कभी राधा से नही मिले। किशोरावस्था दस वर्ष से चौदह वर्ष तक आंकी जाती है। इस आयु तक आते आते वह राधा को अपनी अनन्य प्रेमिका के रूप में स्थापित कर चुके थे ,तो फिर कृष्ण जैसे सोलह कलाओं से युक्त पूर्ण अवतार अपने प्रेम को बिना कोई लक्ष्य दिए कैसे भूल गए या क्यों उपेक्षित करके चले गए ? क्यों अपनी अनन्य प्रेमिका ,भक्त , इच्छा ,चाह ,भावना , जगविख्यात ,युग निर्मात्री को बिना कोई गति

प्रदान किये अकेला छोड़ गए ? कृष्ण के अवतारी प्रभाव व आत्मिक प्रेम के कारण राधा को आज भी भारतवर्ष की आस्था का आधार बनी मन्दिरो में स्थापित तो कर दिया लेकिन राधा के अंत को एक रहस्य बना कर छोड़ दिया।

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए कई ग्रन्थ पढ़े ,कई साक्षत्कार लिए , कई चर्चाएं की ,कई कथावाचकों से बात चीत की लेकिन सबके सब मुझे कोरे दिखाई पड़े और सन्तुष्टि कहीं से नही मिली । राम ,कृष्ण ,परशुराम , बुद्ध या महावीर की मृत्यु के प्रमाण तो मिलते हैं लेकिन राधा की कोई चर्चा नही मिलती। राधा कृष्ण के त्याग के बाद कहां गयी ?,उसके शरीर का क्या हुआ ? आदि प्रश्न मेरे लिए यक्ष बन कर आज भी खड़े हैं।

अपनी पिपासा शांत करने के लिए मैने अपने प्राचीन ग्रन्थ ब्रह्मवैवर्त पुराण , श्रीमद्भागवत , और शिव पुराणों का अध्ययन किया। वहाँ कुछ सूत्र ऐसे मिले जो राधा को कृष्ण की प्रेम धारा के रूप में दर्शाते हैं जैसे --सृष्टि की रचना से पहले प्रलय के समय बाद प्रधान तत्व में स्पंदन होना , "एकोहमबहुस्यां " --को क्रियान्वन करने की इच्छा होना ,सृष्टि रचना के समय प्रधान तत्व के वामांग से किशोरी का प्रकट होना आदि।दूसरे ग्रन्थ के अनुसार प्रधान तत्व के आकार धारण करने के बाद अपने आराध्य को सुनिश्चित करने के लिए अपने वामांग में सौंदर्य को एकत्रित कर किशोरी का आकार देने के बाद स्वयं की आराध्या स्वीकार कर समर्पित होना आदि भी राधा के अस्तित्व पर प्रकाश डालते हैं।

राधा नाम की कोई बाला भले ही वृषभानसुता बन कर इस धरती पर जन्मी हो किन्तु बाल कृष्ण के साथ उसकी भी बाल क्रीड़ाएँ करने वाली राधा की चर्चा कहीं नही मिलती।राधा -का अर्थ ही उस कैशोर्य से है जो मस्त ,मनमौजी ,अल्हड़ ,सहृदय ,संवेदनशील , कोमल भाव वाले आयु के हृदय का वो आकर्षण है ,जो पूरे बरसाना और वृन्दावन की आत्मा बन कर बैठ गयी थी । लेकिन फिर भी राधा के मिलने से पूर्व कृष्ण का राधा के प्रति आकर्षण की चर्चा भी कहीं पढ़ने को नही मिलती।

राधा का प्राकट्य सीधे किशोरावस्था में ही दर्शाया गया है और प्रकृति पुरुष का आकर्षण अपनी चरमावस्था की ओर बढ़ने लगता है। यद्यपि प्रकृति का आधिदैविक आकर्षण केवल राधा के ही लिए विशिष्ट नही बनता वरन उस आकर्षण की अनुभूति जड़ चेतन में भी स्पष्ट दिखाई देती है। शायद यह किसी अवतारी या विशिष्ट आत्मा के शारीरिक औरा का भी प्रभाव मात्र हो सकता ,लेकिन राधा कृष्ण की विशिष्ट सखी किशोरावस्था में ही बनती है। यह भी सत्य प्रतीत हुआ कि कृष्ण का व्यक्तितत्व व उसके वेणु वादन के कौशल से स्थावर ,जड़ ,जंगम सभी प्रभावित हो जाते थे। आस पास की गोपियां ,गाय ,जमना ,पशु ,पक्षी तक जड़ हो जाते थे। गोपियां बिना परिवार या पति

की ,सामाजिक मान मर्यादा की परवाह किये बिना कृष्ण की वेणु सुनने , उसके साथ नृत्य करने ,किलोल करने में भी नही झिझकती थी। किन्तु राधा तो कृष्ण की आत्मा ,शक्ति ,बल सबकुछ थी ,फिर राधा को छोड़ जब मथुरागमन किया तो राधा का कोई प्रबन्ध क्यो नही किया ? यदि नही भी किया तो उसके शेष जीवन का क्या हुआ ? उसके शरीर का क्या हुआ? यदि राधा की मृत्यु नही हुई ,तो क्या राधा आज भी जीवित है ? द्वापर युग के अंत में उस युग की महानायिका के अंत पर दृष्टिपात करना किसी ने उचित नही समझा या प्रेम जैसे जगत के आधार को युग के अंत को स्थान ही नही दिया गया ? द्वापर युग यदि क्रूर , रक्तपात ,और अपमान का युग रहा जिसकी जघन्य घटनाओं को पुराणों में स्थान मिला लेकिन उसी युग की निश्छल ,निष्कपट ,आधिदैविक अनन्त प्रेम की देवी राधा उपेक्षित ही रह गयी।

यही कुछ प्रश्न हैं जो अब भी मेरे मन मे चुभते है। गहनअध्ययन के बाद जो समझ आया उसी भाव को केंद्र में रख इस खण्ड काव्य की रचना की। निश्चित ही यह एक प्रेम काव्य बन पड़ा जिसमें प्रेम आँखो के रास्ते आ कर हृदय में समाता है और फिर बिना कुछ पाए ,बिना कुछ चाहे ,बिना कुछ मांगे समर्पण की वेदी में जल कर भस्म हो जाता है जो समय के साथ धूल या राख बन कर हवा के साथ ब्रम्हांड में लीन हो जाता है। शेष रहते हैं तो उसके स्वर ,उसकी वेदना ,उसकी खिलखाहटे , उसके आसूं और चिरकाल तक रहने वाली महकती खुशबू।

पढ़ने पर समझ आया कि राधा कृष्ण की वह मानसिक धारा थी जो कुवृत्तियों की निवृत्ति कर वाह्य धारा को अन्तस् में मोड़ कर रखने में सक्षम थी। एक एक दोष को या कुवृत्ति को समाप्त कर आध्यात्मिक औरे में रहनेवाली धारा ही राधा है जो निष्कलंक ,निर्दोष ,निर्मल, सरल और सरस् है इसीलिए वह परमात्मा की शक्ति है। ब्रह्म का अंश है। ईश्वर का अर्धांग है ,उसकी ऊर्जा है ,उसकी शक्ति है जिसका उपयोग वह विशिष्ट परिस्थितियो में ही करता है। राधा कृष्ण की आराध्या है ,उसका चित्त है ,उसका सौंदर्य है और उसका अर्धांग भी है। इसलिए कृष्ण कभी राधा का श्रृंगार करते है ,कभी आराधना करते है और कभी हृदय से उसके साथ अनासक्त वासना से परे रह कर रमण भी करते है ,रास भी रचते है और वियोग भी देते है।